वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियों (Species/Scheme of Library classification)

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है और इसी गुण के कारण प्राकृतिक वस्तुओं को रंग-रूप आकार के आधार पर अलग-अलग समुह में रखकर अलग-अलग दिया। इसी तरह वर्गीकरण पद्धति की शुरूआत हुआ। पुस्तकालय विज्ञान में वर्गीकरण का अपना विशेष महत्व है क्योंकि बिना वर्गीकरण के पुस्तकों को ढूँढ निकालना या समूहों में रखना मुश्किल है। वर्तमान समय में पुस्तकालय वर्गीकरण हेतु कई पद्धतियाँ प्रचलित है।

पुस्तकालय विज्ञान के विद्वानों द्वारा पुस्तकों के वर्गीकरण पर ध्यान दिया गया पुस्तकालयों विज्ञान के अंतर्गत वर्गीकरण की निर्मनलिखित पद्धति डॉ० रंगनाथन द्वारा बताए गए: -

1. परिगणनात्मक वर्गीकरण Enumerative classification

2. लगभग परिगणात्मक वर्गीकरण Almost Enumerative classification

3. लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण Almost Faceted classification

4. अपरिवर्तनीय पक्षात्मक वर्गीकरण Rigidly Faceted classification

5. लगभग मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण Almost Freely Faceted classification

6. पुर्णतः मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण Fully Faceted classification

(i) परिगणनात्मक वर्गीकरण (Enumerative classification): वैसी पद्धति जिसमें "Ready made" नम्बर रहता है और इसमें किसी भी तरह के जोड़ घटाव को अनुमति नहीं रहती है। यानि कि बना-बनाया रेडिमेड नम्बर उपलब्ध होता है, इस प्रकार के वर्गीकरण पद्धति का उदाहरण Library of congress classification है।

(ii) लगभग परिगणात्मक वर्गीकरण (Almost Enumerative classification): इस तरह के classification पद्धति में क्लास न० लगभग बना-बनाया होता है फिर भी इसमें थोड़ा बहुत जोड़-तोड़ कर नम्बर बनाया जाता है इस पद्धति का उदाहरण D.D.C. है जैसे कि D.D.C. में History of Hindi Literature का नम्बर बनाना हो तो हिन्दी Literature बना-बनाया मिल जायेगा, परन्तु History के लिए Table 1 से 09 लाकर, जोड़कर नंबर बनाना पड़ेगा।

(iii) लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण (Almost Faceted classification): इस पद्धति में क्लास न० लगभग बना-बनाया होता है फिर भी इसमें पक्षात्मक वर्गीकरण का गुण भी पाया जाता है। इस पद्धति का उदाहरण U.D.C. है।

(iv) अपरिवर्तनीय पक्षात्मक वर्गीकरण (Rigidly Faceted classification): इस तरह के वर्गीकरण पद्धति निर्माता डा. रंगनाथन ते जिन्होने अपनी पद्धति Colon Classification के प्रथम संस्कारण संस्करण में पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति को अपनाया तथा समस्त ज्ञान जगत को पक्षों (Facets) में विभाजित किया। इस तरह के वर्गीकरण पद्धति मे विषयों को पूर्व निर्धारित फेसेट में बाँट लिया जाता है और Facet Sequence का निर्धारण पूर्व ही कर लिया जाता है।

(v) लगभग मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण (Almost Freely Faceted classification): -इस तरह के वर्गीकरण पद्धति के अंतर्गत Colon Classification के 4 वें, 5 वें, 6 वें संस्करण को रखा जाता है। इस तरह के वर्गीकरण पद्धति मे विषयों को पूर्व निर्धारित फेसेट में बाँट लिया जाता है परंतु सभी facet के लिए अलग अलग Indicator Digit (योजक चिन्ह) का प्रयोग किया गया है।

(vi) पुर्णतः मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण (Fully Freely Faceted classification): इस

तरह के वर्गीकरण पद्धति के अंतर्गत Colon Classification के 7 वें संस्करण को रखा जाता है। इस तरह के वर्गिकरण पद्धति मे विषयों को फेसेट में बाँट लिया जाता है और Facet Sequence का निर्धारण बाद में किया जाता है।

पुस्तकालय विज्ञान में वर्गीकरण का अपना विशेष महत्व है क्योंकि बिना वर्गीकरण के पुस्तकों को ढूँढ निकालना या समूहों में रखना मुश्किल है। वर्तमान समय में पुस्तकालय वर्गीकरण हेतु कई पद्धतियाँ प्रचलित है और वर्गीकार को वर्गीकरण कार्यों हेतु इसके विभिन्न पद्धतियों की जानकारी आवश्यक हो जाता है।

_____Manisha_____